पाठ 7

वृक्षों की महिमा

माँ ने वट सावित्री का व्रत रखा था। वह पूजा की तैयारी कर रही थी। यह देखकर गौरी ने पूछा, माँ आज कोई विशेष पूजा है क्या? माँ ने बताया कि आज बड़ वृक्ष की पूजा की जाएगी। इसी तरह अनेकों प्रकार के वृक्षों की पूजा विभिन्न अवसरों पर की जाती है। जैसे–आँवला नवमी पर आँवले की, दशामाता के व्रत में पीपल की आदि। वृक्षों की पूजा करके हम उन्हें बचाए रखने का सदेंश व प्रयास करते हैं। सरकार द्वारा भी जंगलों को बचाने हेतु वृक्षों के संरक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। हमें पर्यावरण को सन्तुलित बनाए रखना है तो हमें न केवल पेड़ बल्कि हमारे आस–पास के सभी जीवों को भी बचाना होगा।

(पूजा की तैयारी करते–करते माँ व गौरी का वार्तालाप)

गौरी ने पूछा ऐसा क्यों करना चाहिए?

माँ – जंगल के वृक्ष नष्ट होने पर जीव–जन्तुओं के भोजन व आवास की समस्या उत्पन्न हो जाएँगी।

गौरी – माँ, मैंने अमृता देवी के बारे में सुना था, उनके बारे में विस्तार से बताओ ना।

माँ – बहुत पहले जोधपुर के राजा को अपने महल को बनाने के लिए लकड़ियों की जरूरत थी। अतः राजा ने खेजड़ी के वृक्षों को काटने का आदेश दिया। इस पर वहाँ पर रहने वाले विश्नोई समाज के लोगों ने विरोध किया था। राजा के आदेश पर सैनिक खेजड़ली गाँव में वृक्ष काटने गए। जैसे ही सैनिकों ने खेजड़ी वृक्ष को काटना शुरू किया, अमृता देवी विश्नोई पेड़ों से चिपक गई, कहा मुझे काटकर ही तुम लोग पेड़ों को काट पाओगे। गाँव वाले भी पेड़ों से चिपक गए। राजा के सैनिकों ने अमृता देवी व गाँव वालों को पेड़ों सहित काट दिया। खेजड़ी वृक्षों को बचाने हेतु 363 लोगों के साथ अमृता देवी विश्नोई ने बलिदान दिया था। इतिहास में ऐसी कोई घटना नहीं मिलती जहाँ लोगों ने वृक्षों के लिए अपने प्राण त्याग दिए। इस घटना से प्रेरणा लेकर ही **चिपको आंदोलन** चलाया गया।

चित्र 7.1 चिपको आंदोलन–पेड़ों को बचाने का संदेश देती महिलाएँ

गौरी – पेड़ों को बचाने के लिए लोगों ने अपनी जान भी दे दी, क्यों?

माँ – पेड़ों को बचाने के लिए लोगों ने अपनी जान दे दी, क्योंकि पेड़–पौधे हमें फल, फूल, अनाज, सब्जियाँ, लकड़ियाँ, औषधियाँ व ऑक्सीजन देते हैं।

सोचिए और बताइए

- आपके आस–पास किन–किन पेड़–पौधों की पूजा की जाती है?
- पता कीजिए कि किस वृक्ष को हमारा राज्य वृक्ष घोषित किया गया है?
- वृक्षों को कटने से बचाने के लिए लोगों द्वारा क्या–क्या प्रयास किए जा रहे हैं?
- आपके आस–पास किस अवसर पर पेड़–पौधे लगाने की परंपरा है?

वन सम्पदा संरक्षण–राजस्थान की प्राचीन संस्कृति

भंवर और योगीराज मेला देखकर अगले दिन कक्षा–कक्ष में मेले के बारे में चर्चा करते हैं–

भंवर – हमारे स्थानीय लोक देवता का मेला देखने में बहुत आनन्द आया है। मुझे तो मेले प्रांगण के पास बहुत बड़ा चारागाह व ओरण देखने को मिला है।

योगीराज – ये चारागाह व ओरण किसे कहते हैं?

भंवर – मैंने बहुत से पेड़, झाड़ियाँ और बिना जुताई की जमीन देखी है। पेड़, झाड़ियों से देखकर लगता है कि यहाँ कुल्हाड़ी से कटाई नहीं होती है।

योगीराज – तुम्हें इतनी सारी जानकारी कैसे है?

भंवर – मेरे गाँव में सभी लोग इस प्रकार की भूमि से लकड़ी नहीं काटते हैं। अधिक जानकारी हम गुरुजी से पूछते हैं।

योगीराज – गुरुजी, चारागाह और ओरण के बारे में जानकारी दीजिए।

शिक्षक – देखो बच्चों, हमारे राजस्थान में पर्यावरण को बचाने की जन चेतना वर्षों पुरानी है। गाँव के आस–पास की भूमि को किसी लोक देवता, लोक देवी, संत और महापुरुष के नाम से संरक्षित करते हैं। यह ओरण भूमि कहलाती है।

योगीराज – गुरुजी, इस भूमि से गाँव के लोग लकड़ी नहीं काटते हैं?

शिक्षक – हाँ,गाँव के लोग इस भूमि से लकड़ी नहीं काटते हैं। गोचर, चारागाह व ओरण भूमि पर संरक्षण का मुख्य कारण स्थानीय लोगों में पर्यावरण चेतना के प्रति आदरभाव है।

योगीराज – गुरुजी, गाँव वाले इस प्रकार की भूमि से संबंधित सरकार के कानून की भी चर्चा करते हैं।

शिक्षक – हाँ, योगीराज बिल्कुल सही बात कर रहे हो। गोचर, ओरण व चारागाह भूमि पर स्थानीय लोगों की पर्यावरण चेतना के प्रति आदरभाव व पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता होने के कारण राजस्थान सरकार द्वारा कानून बनाकर इस प्रकार की भूमि का संरक्षण किया गया है।

योगीराज – गुरुजी, पर्यावरण संरक्षण के लिए स्थानीय लोगों में आदरभाव व सरकार द्वारा बनाए कानून से ग्रामीण क्षेत्रों में ओरण, गोचर व चारागाह भूमि का संरक्षण हुआ है। इसी प्रकार राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रथा एवं परम्परा द्वारा वन संरक्षित किए जाते हैं।

सोचिए और बताइए

- आपके आस–पास इस प्रकार संरक्षित भूमि को क्या कहते हैं?
- वृक्षों को काटने से बचाने के लिए गाँवों में प्राचीनकाल से ही किस प्रकार की जनचेतना थी?
- गोचर, ओरण व चारागाह के बारे में राजस्थान सरकार ने क्या प्रयास किए ?

अपने जन्म दिन/नये वर्ष के अवसर पर या कोई विशेष दिवस, जिसे आप महत्त्वपूर्ण मानते हैं, उस दिन एक–एक पौधा लगाकर उसे बड़ा करने का संकल्प लें। उसकी पूर्ण देखभाल करें। इस प्रकार हम सब मिलकर वृक्षों को संरक्षित एवं सुरक्षित कर सकते हैं।

चर्चा कीजिए

- जंगल किसे कहते हैं?
- जंगल में वृक्षों की कमी होगी तो क्या होगा ?
- जंगल में वृक्षों के अलावा और क्या–क्या होता है?
- क्या आप अपने विद्यालय में पेड़ लगाते हैं?
- पेड़ों की देखभाल आप और आपके साथी किस प्रकार करते हैं ?

नीचे तालिका में राजस्थान के अभयारण्य दिए गए है, उनके सामने उन जिलों के नाम है जहाँ वे स्थित है। राजस्थान का मानचित्र लेकर उन जिलों को अंकित करो जहाँ ये अभयारण्य स्थित हैं।

चित्र 7.2 राजस्थान का मानचित्र (पैमाने पर आधारित नहीं है)

उद्यान / अभयारण्य	जिला
1. रणथम्भौर बाघ संरक्षण राष्ट्रीय उद्यान	सवाई माधोपुर
2. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, घना पक्षी विहार	भरतपुर
3. राष्ट्रीय मरू उद्यान	जैसलमेर, बाड़मेर
4. राष्ट्रीय उद्यान सरिस्का	अलवर

खाद्य शृंखला

गौरी– वनों में रहने वाले जानवरों को खाना कौन खिलाता होगा?

माँ ने बताया कि जंगल में शाकाहारी जानवर पेड़–पौधों से अपना भोजन प्राप्त करते हैं एवं मांसाहारी जानवर छोटे जानवरों को खाकर अपना पेट भरते हैं।

जैसे –

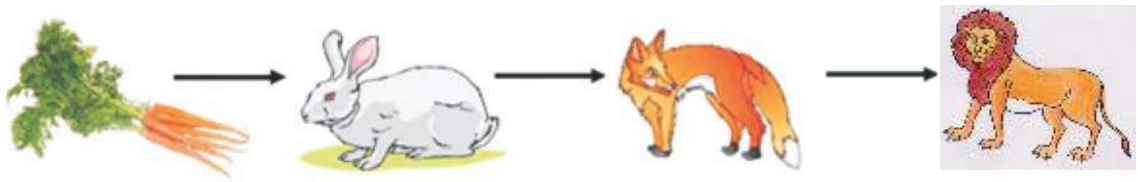

पौधे → खरगोश → लोमड़ी → शेर

चित्र 7.3 खाद्य शृंखला

सूची बनाइए कि कौन किसको खाता है?

भोजन	खाने वाला जीव
1. पौधे	
2. हिरण	
3. मुर्गी	
4. बीज	
5. चूहा	

चित्रों को देखकर बताओ–कौन किसको खाता है।

चित्र 7.4 खाद्य शृंखला

पेड़–पौधे व जीव–जन्तुओं के भोजन के आधार पर संबंध को खाद्य शृंखला कहते हैं।

सोचिए और बताइए

- तोता क्या खाता है? .....
- गाय क्या खाती है? .....
- गिलहरी क्या खाती है? .....

हमने सीखा

- पेड़ हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। अतः हमें इन्हें काटना नहीं चाहिए।
- पेड़ों को संरक्षित करने के लिए अलग–अलग क्षेत्र विशेष में इनकी पूजा का महत्त्व है।
- खेजड़ी वृक्ष को बचाने के लिए अमृता देवी ने अपना बलिदान दिया, जिसकी प्रेरणा से चिपको आंदोलन चलाया गया।
- जंगल में एक जीव दूसरे जीव को खाता है इस प्रकार खाद्य शृंखला बनती है।

जाना–समझा, अब बताइए

- खाद्य शृंखला से आप क्या समझते हैं, उदाहरण दीजिए।
- अभयारण्य से आप क्या समझते हैं ?
- चिपको आंदोलन के बारे में लिखिए।
- पेड़ों से होने वाले लाभों की सूची बनाइए।

"वृक्ष लगाओ, जंगल बचाओ"